

विषय-सूची

श्रीमद्भागवतम्

विषय-सूची

आमुख

प्राक्कथन

प्रस्तावना

अध्याय चौदह

ब्रह्मा द्वारा कृष्ण की स्तुति

अध्याय का सारांश

शुद्धात्माओं से भगवान् का श्रवण करना ही उन्हें जीतने का एकमात्र साधन

कृष्ण के दिव्य गुणों की गणना सम्भव नहीं

भगवान् के शरीर से असंख्य ब्रह्माण्डों का उद्भास

हर वस्तु कृष्ण की शक्तियों की अभिव्यक्ति

भगवान् का शरीर भौतिक विकारों से सर्वथा मुक्त

अपनी दया से भगवान् का प्राकट्य

ब्रह्मा द्वारा वृन्दावन के जंगल में वृक्ष रूप में जन्म लेने की प्रार्थना

कृष्ण तथा उनके ग्वालमित्र पुनः अपनी क्रीड़ा में मग्न

कृष्ण हरएक के स्नेह की सर्वप्रिय वस्तु क्यों ?

कृष्ण के चरणकमलों की नाव माया के समुद्र को गोखुर में बदलने वाली है

अध्याय पन्द्रह

धेनुकासुर वध

अध्याय का सारांश

भगवान् कृष्ण द्वारा भगवान् बलराम का यशोगान
ग्वालबालों का दोनों दिव्य भाइयों के साथ खेलना
ग्वालबालों का कृष्ण तथा बलराम से धेनुक का वध करने का आग्रह
बलराम द्वारा धेनुक को मारकर तालवृक्ष के ऊपर फेंका जाना
कृष्ण तथा बलराम द्वारा अन्य गर्दभ असुरों का संहार
गोपियों द्वारा कृष्ण के मुखकमल के मधु-रूपी सौन्दर्य का पान
कृष्ण द्वारा गौवों तथा ग्वालबालों को पुनः जीवन-दान

अध्याय सोलह

कृष्ण द्वारा कालिय नाग को प्रताड़ना
अध्याय का सारांश
कालिय सरोवर का उग्र विष
कृष्ण का कालिय को ललकारना तथा उसकी कुंडली में बाँधा जाना
ग्वालसमुदाय का किंकर्तव्यविमूढ होना
कालिय के अनेक फनों पर भगवान् द्वारा नृत्य
कालिय की पत्नियों द्वारा कृष्ण की स्तुति
अपने पति को क्षमा करने के लिए कालिय की पत्नियों द्वारा कृष्ण से प्रार्थना
कृष्ण द्वारा कालिय तथा उसके परिजनों को यमुना त्यागने का आदेश
कालिय द्वारा कृष्ण की पूजा और उसका रमणक द्वीप को लौट जाना

अध्याय सत्रह

कालिय का इतिहास
अध्याय का सारांश
कालिय ने रमणक द्वीप क्यों छोड़ा
कृष्ण को यमुना में से ऊपर आते देखकर वृन्दावन वासियों का अत्यधिक हर्षित होना
दावाग्नि से ब्रजवासियों के लिए संकट उपस्थित होना

कृष्ण द्वारा दावाग्नि का निगला जाना

अध्याय अठारह

भगवान् बलराम द्वारा प्रलम्बासुर का वध

अध्याय का सारांश

वृन्दावन में वसन्त ऋतु जैसा ग्रीष्म

कृष्ण, बलराम तथा ग्वालबालों का जंगल में खेलना

ग्वालबाल के वेश में प्रलम्ब का खेल में सम्मिलित होना

असुर द्वारा बलराम का अपहरण

बलराम द्वारा प्रलम्ब का वध

अध्याय उन्नीस

दावानल पान

अध्याय का सारांश

कृष्ण, बलराम तथा ग्वालबालों को उनकी गौवें मिलना

बालकों द्वारा दावाग्नि से बचाये जाने के लिए कृष्ण तथा राम को पुकारा जाना

कृष्ण द्वारा दावाग्नि का निगला जाना

गोपियों का कृष्ण को व्रज लौटते देखकर परम प्रसन्न होना

अध्याय बीस

वृन्दावन में वर्षाऋतु तथा शरद

अध्याय का सारांश

वर्षाऋतु का शुभारम्भ और वृन्दावन का हरा भरा होना

मेढकों की टर् टर्, मानो ब्राह्मण-छात्रों द्वारा अपने पाठों को बाँचना

खेतों से अन्न-सम्पदा का प्राप्त होना, और किसानों को पुनर्जीवन-दान

बादलों द्वारा चन्द्रमा का ढका जाना मानो मिथ्या अहंकार आत्मा को ढक रहा हो

कृष्ण द्वारा अपने मित्रों के साथ हरे-भरे जंगल का विहार करना

शरद का आगमन

वृन्दावन के जंगल की मन्द वायु से सारे कष्टों का शमन

कृष्ण के अंश रूप में समृद्ध पृथ्वी का सुन्दरता से चमकना

अध्याय इक्कीस

गोपियों द्वारा कृष्ण के वेणुगीत की सराहना

अध्याय का सारांश

मधुमक्खियों, पक्षियों तथा कृष्ण की वंशी से गुंजरित वृन्दावन

कृष्ण का अपने होंठों के अमृत से अपनी वंशी को पूरित करना

भाग्यशाली नेत्रों द्वारा कृष्ण तथा बलराम के मुखड़ों का दर्शन

समस्त नारियों के लिए हर्षोल्लास कृष्ण का सौंदर्य तथा चरित्र

नदियों द्वारा मुरारी के चरणों का आलिंगन

कृष्ण के भक्तों में गोवर्धन सर्वश्रेष्ठ

अध्याय बाईस

कृष्ण द्वारा अविवाहिता गोपियों का चीर-हरण

अध्याय का सारांश

गोपियों द्वारा कात्यायनी की पूजा

कृष्ण द्वारा युवा कुमारियों का वस्त्र-हरण

हास-परिहास द्वारा कृष्ण का गोपियों को मोहित करना

आकुल, कंपित तथा आनन्द से पूर्ण गोपियों का जल से बाहर आना

कृष्ण का गोपियों को ठगना और उनकी इच्छापूर्ति करना

कृष्ण पर मन एकाग्र करने से भौतिक इच्छाओं का विनाश

कृष्ण द्वारा ब्रज के वृक्षों की प्रशंसा

अन्यों को लाभ पहुँचाने के लिए ही जीवन

अध्याय तेईस

ब्राह्मण-पत्नियों को आशीर्वाद

अध्याय का सारांश

भोजन माँगने के लिए कृष्ण द्वारा अपने भूखे मित्रों को भोजना

ग्वालबालों द्वारा निवेदन

गर्वित ब्राह्मणों द्वारा बालकों का तिरस्कार

ब्राह्मणों की पत्नियों का भोजन लेकर कृष्ण के पास जाना

कृष्ण का नाटक के नर्तक की भाँति दिखना

बुद्धिमानों द्वारा कृष्ण की सेवा

ब्राह्मणों की पत्नियों की कृष्ण के पास रुकने की इच्छा

कृष्ण द्वारा ब्राह्मण-पत्नियों को लौटने की सलाह

ग्वालबालों तथा कृष्ण द्वारा प्रिति-भोज का आनन्द लूटा जाना

ब्राह्मणों द्वारा अपने आपको कोसा जाना

कृष्ण द्वारा याचना किया जाना आश्चर्य-जनक

ब्राह्मणों द्वारा क्षमा-याचना के लिए प्रार्थना

अध्याय चौबीस

गोवर्धन पूजा

अध्याय का सारांश

आने वाले यज्ञ के विषय में कृष्ण द्वारा पूछताछ

नन्द द्वारा यह बताया जाना कि ग्वाले इन्द्र की पूजा क्यों करें

कृष्ण द्वारा इन्द्र की अपेक्षा कर्म की श्रेष्ठता की घोषणा

मनुष्य का बद्ध स्वभाव ही प्रधान

कर्म पूज्य है

गोरक्षा वृन्दावन का धर्म

कृष्ण द्वारा इन्द्र के पराक्रम का उपहास

गोवर्धन पूजा कैसे की जाय

चढ़ावा खाने के लिए कृष्ण द्वारा विराट रूप धारण किया जाना

ग्वालों तथा कृष्ण का व्रज में वापस आना

अध्याय पच्चीस

कृष्ण द्वारा गोवर्धन-धारण

अध्याय का सारांश

क्रुद्ध इन्द्र द्वारा ब्रह्माण्ड का विनाश करने वाले बादलों का भेजा जाना

इन्द्र द्वारा कृष्ण को छोटा करके आँकना

बादलों द्वारा वृन्दावन पर वर्षा तथा ओले बरसाना

शरण के लिए गौवों तथा ग्वालों का कृष्ण के पास आना

कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत का उठाया जाना

पर्वत के नीचे सब का शरण लेना

नम्र होकर इन्द्र द्वारा आप्लावन बन्द

गौवों तथा ग्वालों का पर्वत के नीचे से बाहर आना

यशोदा, रोहिणी तथा अन्यो द्वारा आनन्दित होकर कृष्ण का आलिंगन

गोपियों द्वारा कृष्ण की महिमा का गायन

अध्याय छब्बीस

अद्भुत कृष्ण

अध्याय का सारांश

सात वर्षीय कृष्ण किस तरह पर्वत को उठाये रहे ?

बालक कृष्ण द्वारा तृणावर्त का गला घोटा जाना

बालक कृष्ण द्वारा वत्सासुर का वध

भगवान् द्वारा कालिय को नीचा दिखाया जाना

गर्गमुनि द्वारा कृष्ण की पहचान की व्याख्या

भगवान् के अनेक नाम

नारायण के ही समान कृष्ण

गोवर्धनधारी कृष्ण की स्तुति

अध्याय सत्ताईस

इन्द्र-देव तथा माता सुरभि द्वारा स्तुति

अध्याय का सारांश

कृष्ण के चरणों पर इन्द्र का शीश झुकाना

लोभ, द्वेष तथा क्रोध का कृष्ण में अभाव

पापियों को ठीक करने के लिए कृष्ण द्वारा दण्ड

इन्द्र द्वारा क्षमा-याचना

इन्द्र के यज्ञ को रोकना कृष्ण का अनुग्रह

कृष्ण उसके इन्द्र बनें: सुरभि की प्रार्थना

सुरभि द्वारा अपने दूध से कृष्ण को स्नान कराना

ब्रह्माण्ड भर में सन्तोष तथा हर्ष

अध्याय अट्ठाईस

कृष्ण द्वारा वरुणलोक से नन्द महाराज की रक्षा

अध्याय का सारांश

वरुण के सेवक द्वारा नन्द महाराज का पकड़ा जाना

वरुणदेव द्वारा कृष्ण का यशोगान

वरुण द्वारा भगवान् से क्षमा-याचना

नन्द समेत कृष्ण का घर वापस आना

सर्व दयामय भगवान् द्वारा ग्वालों को अपना धाम दिखलाया जाना

अध्याय उन्तीस

रास नृत्य के लिए कृष्ण तथा गोपियों का मिलन

अध्याय का सारांश

गोपियों को बुलाने के लिए कृष्ण द्वारा वंशी वादन
कृष्ण से मिलने के लिए युवतियों का वन की ओर दौड़ा आना
गोपियों की विभिन्न टोलियों का वर्णन
गोपियों द्वारा अपने अपने भौतिक शरीरों का परित्याग
राजा परीक्षित का आश्चर्यचकित प्रतीत होना
भगवान् प्रकृति के गुणों से सदैव अछूते
कृष्ण द्वारा युवा गोपियों का सत्कार
पति-सेवा स्त्री का परम कर्तव्य
कृष्ण के श्रवण, ध्यान तथा कीर्तन से उनके प्रेम का उदय
कृष्ण के वचनों से गोपियाँ मर्माहत
युवतियों की याचना
लक्ष्मी देवी द्वारा भगवान् के चरणकमलों की धूलि की स्पृहा
गोपियों की घोषणा: “हे कृष्ण! हम आपकी दासियाँ बनें”
कृष्ण तथा गोपियों का रासनृत्य प्रारम्भ
गोपियों के गर्व को चूर करने के लिए भगवान् का अन्तर्धान होना

अध्याय तीस

गोपियों द्वारा कृष्ण की खोज
अध्याय का सारांश
कृष्ण के विछोह से गोपियाँ किंकर्तव्य विमूढ़
जंगल के वृक्षों तथा पशुओं से युवतियों द्वारा पूछा जाना कि कृष्ण कहाँ हैं
कृष्ण के चरणकमलों का स्पर्श करके धरती आनन्दित
गोपियों द्वारा कृष्णलीलाओं का अनुकरण
गोपियों को जंगल में कृष्ण के पदचिह्नों का मिलना

भगवान् के चरणकमलों का विस्तृत वर्णन
गुप्तचरों की तरह, गोपियों द्वारा कृष्ण की राधारानी के
साथ हुई लीलाओं का अनुमान लगाना
राधा का गर्व चूर करने के लिए कृष्ण का अन्तर्धान होना
गोपियों द्वारा कृष्ण की खोज तथा उनके यश का गायन

अध्याय इकतीस

गोपियों के विरह-गीत

अध्याय का सारांश

गोपियाँ गाती हैं हे वर दाता, आप अपनी दासियों को मार रहे हैं
“कृपया इच्छापूर्ण करने वाले अपने हाथ को हमारे सिर पर रखें”
“कृपया अपने अधरामृत से अपनी दासियों को जीवनदान दें”
“हे छलिया, तुम्हारी मुसकान तथा प्रेमभरी चितवन
हमें अत्यन्त चंचल बनाती हैं”
“आपके बिना एक क्षण भी युग जैसा लगता है”
“हे प्रिय, हमें चिन्ता है कि आपके कोमल चरण
जंगल के मार्ग में आहत हो जायेंगे”

अध्याय बत्तीस

पुनः मिलाप

अध्याय का सारांश

गोपियों के समक्ष कृष्ण का पुनः प्रकट होना
एक गोपी द्वारा कृष्ण के हाथ को अपनी हथेलियों में लिया जाना
श्रीमती राधारानी अग्रगण्य गोपी
गोपियाँ केशव का पुनर्दर्शन पाने के लिए हर्षित
गोपियों के मध्य कृष्ण द्वारा आसन ग्रहण करना

प्रेम आदान-प्रदान के विषय में तरुणियों द्वारा कृष्ण से प्रश्न

कृष्ण प्रेम का आदान-प्रदान क्यों रोकते हैं ?

भगवान् गोपियों के चिरऋणी

अध्याय तैंतीस

रास नृत्य

अध्याय का सारांश

यमुना तटपर रास नृत्य का शुभारम्भ

दुन्दुभियों का बजना और फूलों की वर्षा

गोपियों के मध्य कृष्ण वैसे ही लगते हैं जैसे स्वर्ण आभूषणों के बीच नीलमणि

आह्लाद पूरित गोपियों द्वारा गायन तथा नृत्य

एक गोपी द्वारा कृष्ण की सुगन्धित बाँह का चुंबन

गोपियों के साथ कृष्ण की क्रीड़ा मानों परछाई के साथ बाल-क्रीड़ा

प्रत्येक गोपी का साथ देने के लिए भगवान् द्वारा विस्तार

कृष्ण द्वारा सामान्य नैतिक आचार संहिता का अतिक्रमण

संसारी विषय वासना से कृष्ण मुक्त

परीक्षित भगवान् कृष्ण की बाह्य अश्लीलता से चकित

सामान्य शक्तिशाली नियन्ता भी पापों से बचे हुए

तो फिर भगवान् किस तरह पवित्रता तथा अपवित्रता के

अधीन हो सकते हैं

कृष्ण द्वारा दयावश अपनी दाम्पत्य लीलाओं का अभिनय

ब्रह्मा की रात्रि के बाद गोपियों का घर वापस जाना

श्रोताओं को आशीष

अध्याय चौंतीस

नन्द महाराज की रक्षा तथा शंखचूड का वध

अध्याय का सारांश

विशाल सर्प द्वारा नन्द महाराज को निगलने का प्रयास
कृष्ण द्वारा अपने चरणकमल के स्पर्श से सर्प का उद्धार
सुदर्शन विद्याधर द्वारा अपनी कथा का वर्णन
कृष्ण नाम का कीर्तन करने वाला अपने को
तथा श्रवण करने वाले को पवित्र बनाने वाला
कृष्ण और बलराम रात्रि के समय गोपियों के
साथ आनन्द मनाते हैं
भगवान् के गायन से गोपियाँ मोहित और चकित हो जाती हैं
शंखचूड़ गोपियों का हरण करने का प्रयास करता है
कृष्ण असुर को मारकर उसका शीर्षमणि ले लेते हैं

अध्याय पैंतीस

कृष्ण के वन-विहार के समय गोपियों द्वारा कृष्ण का गायन
अध्याय का सारांश
कृष्ण के वेणुगीत से देवपत्नियाँ भी चकित
कृष्ण के वंशीवादन से ब्रज के बैल, हिरन तथा गौवें स्तम्भित
वृक्षों तथा लताओं द्वारा मधुरस की वर्षा
कृष्ण द्वारा अपनी लीलाओं से सारे विश्व को प्रफुल्लित किया जाना
भगवान् द्वारा अपनी मणि-माला पर गौवों की गणना
मन्द समीर द्वारा कृष्ण का सत्कार
माता यशोदा के गर्भ से उदित चन्द्रमा
गोपियाँ प्रतिदिन कृष्ण की लीलाओं का निरन्तर गान करते हुए आनन्द मनाती हैं

अध्याय छत्तीस

वृषभासुर अरिष्ट का वध

अध्याय का सारांश

अरिष्ट द्वारा ब्रज की चारदीवारियों का तोड़ा जाना

ब्रजवासियों का कृष्ण की शरण में जाना

वृषभासुर द्वारा कृष्ण पर भयानक प्रहार

भगवान् कृष्ण द्वारा अरिष्टासुर का वध

राधाकुण्ड तथा श्याम-कुण्ड की कथा

नारद द्वारा कंस को बताया जाना कि कृष्ण वास्तव में कौन हैं

कृष्ण का वध करने के लिए कंस द्वारा अश्र्वासुर केशी को आदेश

मल्लयुद्ध की योजना

कृष्ण तथा बलराम को वृन्दावन से लाने के लिए कंस द्वारा अक्रूर का भेजा जाना

अध्याय सैंतीस

केशी तथा व्योम असुरों का वध

अध्याय का सारांश

अश्र्वासुर केशी द्वारा गोकुल पर आंतक

कृष्ण का केशी के मुँह में अपनी बाईं भुजा डालना

केशी का वध करने पर देवताओं द्वारा कृष्ण की पूजा

नारद मुनि द्वारा कृष्ण की पूजा

नारद द्वारा कृष्णलीलाओं की भविष्यवाणी

कृष्ण, बलराम तथा ग्वालबालों का आँख-मिचौनी खेलना

व्योमासुर द्वारा अनेक ग्वालबालों का अपहरण

कृष्ण द्वारा व्योम का गला घोंटा जाना

अध्याय अड़तीस

वृन्दावन में अक्रूर का आगमन

अध्याय का सारांश

कृष्ण के प्रति अनुरक्ति से अक्रूर अभिभूत

अक्रूर द्वारा कंस की दया की सराहना

कृष्ण के विषय में कहे गये शब्द संसार को चेतन, सुन्दर तथा शुद्ध बनाने वाले

कृष्ण तथा बलराम से भेंट करने की अक्रूर की पूर्व दृष्टि

कृष्ण के करकमल की महिमा

कृष्ण के आलिंगन से अक्रूर के भवबन्धन कट जायेंगे

कल्पतरु के समान कृष्ण

कृष्ण के पदचिह्नों को देखकर अक्रूर परम आह्लादित

कृष्ण तथा बलराम दो स्वर्णमंडित पर्वतों की भाँति जाज्वल्य मान

कृष्ण द्वारा भावमग्न अक्रूर का आलिंगन

बलराम द्वारा अक्रूर का सत्कार

नन्द द्वारा अक्रूर से मथुरा के जीवन के विषय में पूछताछ

अध्याय उन्तालीस

अक्रूर द्वारा दर्शन

अध्याय का सारांश

कृष्ण द्वारा अक्रूर से कंस की योजना के विषय में पूछा जाना

अक्रूर द्वारा कंस के आसुरी कृत्यों का कृष्ण को बताना

नन्द द्वारा मथुरा चलने की तैयारी करने के लिए गोपों को आदेश

कृष्ण के आसन्न विछोह पर गोपियाँ किंकर्तव्य विमूढ़

गोपियों द्वारा विधाता को कोसना

युवतियाँ मथुरा की स्त्रियों से ईर्ष्यालु

अक्रूर (“क्रूर नहीं”) नाम सही नहीं गोपियों का कथन

रास नृत्य का स्मरण करके गोपियाँ शोकाकुल

अक्रूर द्वारा शोकमग्न गोपियों की उपेक्षा

कृष्ण द्वारा गोपियों को धैर्य दिलाना कि मैं फिर आऊँगा
यमुना के भीतर अक्रूर को कृष्ण तथा बलराम के दर्शन
अक्रूर का भगवान् विष्णु को अनंत शेष नाग पर लेटे देखना
भगवान् विष्णु के सुंदर रूप का वर्णन

अध्याय चालीस

अक्रूर द्वारा स्तुति
अध्याय का सारांश
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भगवान् विष्णु से उद्भूत
मंत्रोच्चार द्वारा विष्णु की पूजा
शुद्ध बुद्धि वाले लोगों द्वारा वैष्णव शास्त्रों का परिपालन
जिस तरह नदियाँ समुद्र में गिरती हैं उसी तरह सारे मार्ग अन्त में विष्णु के पास जाते हैं
भगवान् के विराट रूप का वर्णन
नृसिंह तथा वामन रूप भगवान् को नमस्कार
बुद्ध तथा कल्कि रूप में भगवान् को नमस्कार
शरण के लिए अक्रूर का भगवान् के चरणकमलों के पास जाना

अध्याय इकतालीस

कृष्ण तथा बलराम का मथुरा में प्रवेश
अध्याय का सारांश
यमुना में जो कुछ देखा उससे अक्रूर का चकित होना
कृष्ण को देखने वाले को और क्या देखना शेष
अक्रूर की कृष्ण तथा बलराम से याचना कि वे उसके घर चलें
भगवान् कृष्ण के चरणकमलों की महिमा
कंस को मारने के बाद अक्रूर के यहाँ जाने का कृष्ण द्वारा वादा
कृष्ण तथा बलराम का अपने मित्रों सहित मथुरा में प्रवेश

कृष्ण तथा बलराम को देखने के लिए मथुरा की स्त्रियों का झटपट चले आना
कृष्ण का अपनी अमृतमय मुसकान-युक्त चितवन से स्त्रियों के हृदय को द्रवित करना
एक उद्धत धोबी का मार्ग में आना
कृष्ण का अपनी अँगुली के अग्रभाग से धोबी का सिर काटना
पवित्र जुलाहे का वस्त्राभूषणों से भगवान् को अलंकृत करना
सुदामा माली द्वारा अपने घर में भगवान् का भव्य स्वागत
सुदामा द्वारा कृष्ण तथा बलराम को सुगंधित मालाएँ दिया जाना
कृष्ण द्वारा सुदामा को कई वरदान

अध्याय बयालीस

यज्ञ के धनुष का टूटना
अध्याय का सारांश
कृष्ण का त्रिवक्रा कुबड़ी से चन्दन-लेप माँगना
भगवान् द्वारा कुबड़ी लड़की का सीधा किया जाना
त्रिवक्रा द्वारा कृष्ण को अपने घर बुलाया जाना
कृष्ण के देखते ही मथुरा की स्त्रियों के हृदयों में
कामदेव का जागृत होना
कृष्ण द्वारा यज्ञ के विशाल धनुष का तोड़ा जाना
कृष्ण तथा बलराम द्वारा धनुष के रखवालों का वध
श्रीलक्ष्मी का कृष्ण के सौन्दर्य की शरण चाहना
सोते जागते कंस का भयावने दृश्य देखना
दर्शकों का कुशती के अखाड़े में आसन ग्रहण करना
अध्याय तैतालीस
कृष्ण द्वारा कुवलयपीड का वध
अध्याय का सारांश

कुवल्यापीड से लड़ने के लिए कृष्ण द्वारा तैयारी
कृष्ण पर आक्रमण करने के लिए महावत द्वारा
कुवल्यापीड पर अंकुश की मार
कृष्ण द्वारा हाथी को पच्चीस बाण-दूरी तक घसीटा जाना
कृष्ण द्वारा कुवल्यापीड का तंग किया जाना
कृष्ण का हाथी दाँत लेकर अखाड़े में प्रवेश
दर्शकों द्वारा कृष्ण को विभिन्न प्रकारों से देखा जाना
कृष्ण तथा बलराम द्वारा अपने तेजोमय सौन्दर्य से
सबों को मोहित करना
दर्शकों में से स्त्रियों द्वारा कृष्णलीलाओं का पुनः स्मरण
कृष्ण तथा बलराम को कुशती लड़ने के लिए चाणूर का ललकारना
कृष्ण द्वारा इस ललकार का स्वागत
अध्याय चवालीस
कंस वध
अध्याय का सारांश
चाणूर तथा मुष्टिक से कृष्ण तथा बलराम की कुशती
प्रतियोगियों द्वारा एक दूसरे को पीटना, पकड़ना,
खेंचना, धकेलना, कुचलना और फेंकना
दर्शकों में से स्त्रियों द्वारा इस असमान जोड़ी की कुशती की भर्त्सना
मथुरा की स्त्रियों द्वारा दोनों भाइयों के मुखमंडल के सौन्दर्य की प्रशंसा
कृष्ण का निरंतर दर्शन पाने के लिए गोपियों ने
कौन सी तपस्याएँ की होंगी ?
कुशती प्रतिद्वंद्विता से देवकी तथा वसुदेव त्रस्त
कृष्ण द्वारा चाणूर का वध

कृष्ण द्वारा अपने पाँव के एक ही प्रहार से शल तथा
तोशल का वध
राजा कंस का कृष्ण तथा उनके मित्रों पर रोष
कृष्ण द्वारा कंस को राजसिंहासन से गिराकर जान से मार डालना
कंस द्वारा मोक्ष-प्राप्ति
कंस की मृत्यु पर देवताओं का हर्षित होना
कंस की पत्नियों का विलाप
कृष्ण तथा बलराम का अपने माता-पिता से पुनर्मिलन
परिशिष्ट
लेखक परिचय